श्री सत्य साई

इस दुनिया में दो तरह के लोग रहते है।

एक तो नास्तिक और दूसरे आस्तिक।

अपनी आँखों से जो दिखाई देता है, वही सच है और जो दिखाई नहीं देता उसका अस्तित्व ही नहीं है-ऐसा मानना ही नास्तिकता है।

भौतिक आँखों से जिसे नहीं देख सकते, केवल दिव्य चक्षुओं से ही देख सकते हैं, वह आत्मतत्त्व ही समस्त भौतिकता का मूल आधार है, ऐसा मानना ही आस्तिकता है।

सृष्टि के आरम्भ से ही नास्तिकता और आस्तिकता के बीच संघर्ष होता रहा है।

नास्तिक लोग हमेशा दुखी जीवन बिता रहे हैं और आस्तिक लोग हमेशा आनन्दपूर्वक जी कर नित्य प्रगति को प्राप्त कर रहे हैं।

समय-समय पर स्वच्छ आस्तिकता का प्रबोध करने के लिए महापुरुष धरती पर अवतार लेते रहे हैं। ऐसे महापुरूषों में आज के सत्यसाई अग्रगण्य हैं। मूर्ख नास्तिक लोगों को विज्ञ आस्तिक बनाना ही उनके जीवन का ध्येय है।

सभी रागों, आंदोलनों, बाधाओं, भय व युद्ध आदि का मूल कारण नास्तिकता ही है। समस्त सिद्धियों, सौभाग्य व स्वास्थ्य आदि का मूल स्वच्छ आस्तिकता ही है।

श्री सत्यसाई के त्यागमय जीवन के द्वारा इस दुनिया के लाखों मूर्ख नास्तिकता से स्वच्छ आस्तिकता की ओर आ चुके हैं और आ भी रहे हैं। श्री सत्य साई ग्रांड मास्टर जी को पिरामिड स्पिरिचुअल सोसाइटियों के सभी ध्यानियों और मेरी ओर से विनम्र प्रणाम।

मगर 'स्वच्छ आस्तिकता' से हमें और आगे बढ़ना है, हमें अपने 'सहज सिद्धत्व' और 'सहज बुद्धत्व' को प्राप्त करना है। श्री सत्य साई के मार्ग पर चलते हुए हमें भी उन जैसा त्यागी बनना है, तभी उन्हें सच्चा आनन्द मिलेगा।

इसी प्रकार गौतम बुद्ध जैसे लोगों के मार्ग पर चल कर क्रमशः सभी को सिद्धत्व और बुद्धत्व प्राप्त करना है। यही वे चाहते हैं और पसन्द करते हैं।

निरन्तर ध्यान-साधना से ही 'सिद्धत्व' की सिद्धि होती ह। ध्यान साधना का मतलब केवल आनापानसति या विपस्सना साधना ही है।

निरन्तर ज्ञान व ध्यान बोध से ही हम बुद्ध हो जाएँगे। हमें पहले नास्तिक लोगों को आस्तिक बनाना है फिर आस्तिक लोगों को विकसित होकर आध्यात्मिक शास्त्रज्ञ बनना है।

ध्यान से ज्ञान! ज्ञान से मुक्ति!